KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

इतिहास

भाग - 2

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 8

Pritesh Joshi

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

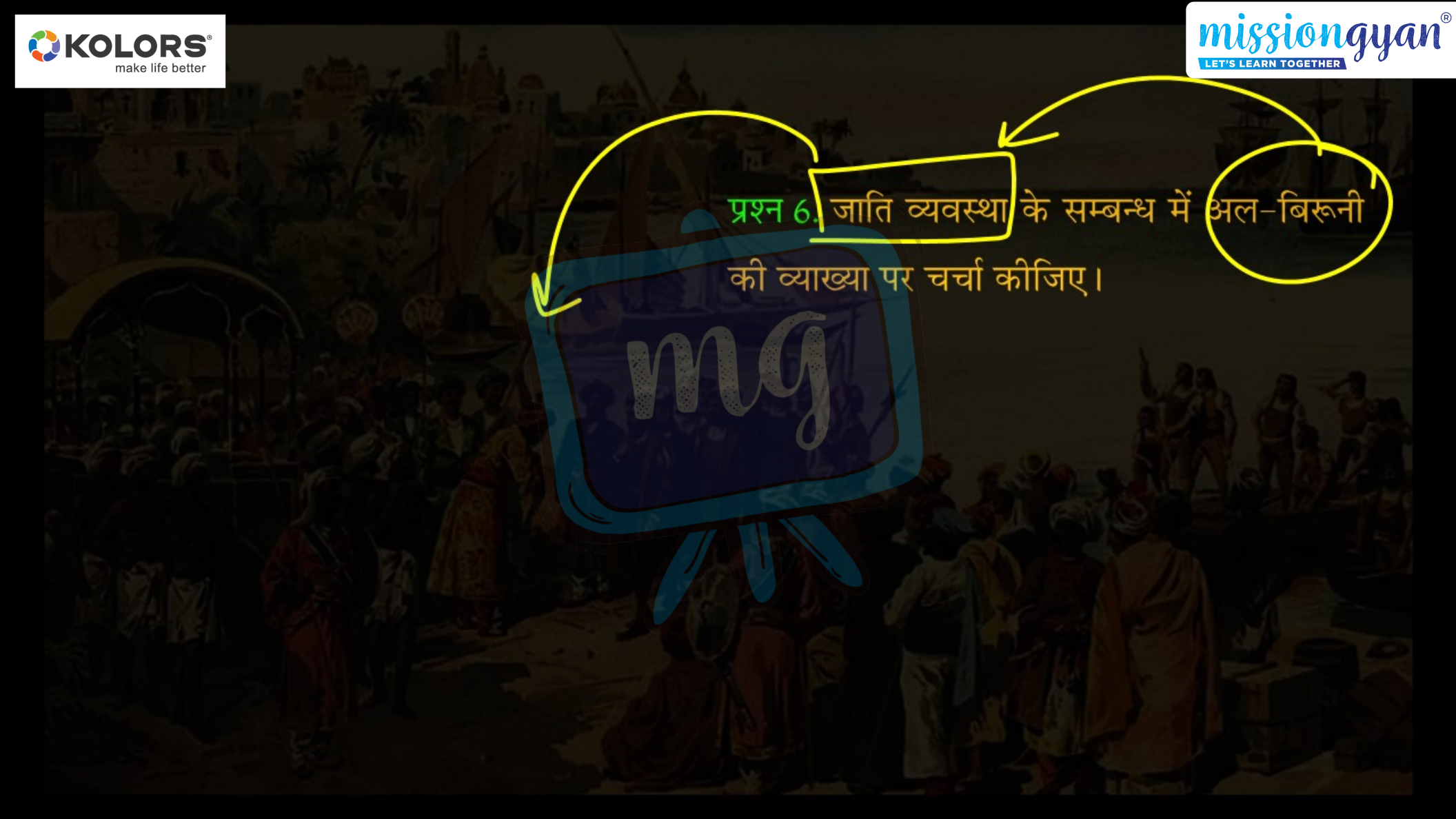

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

In 200.

उत्तर : अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक "किताब-उल-हिन्द" में भारतीय समाज में प्रचलित जाति-व्यवस्था का विशुद्ध वर्णन किया है। उनकी व्याख्या निम्नानुसार है -

1. सामाजिक वर्गों का विवरण :- अल-बिरूनी ने अपनी पुस्तक में भारतीय जाति-व्यवस्था के सम्बन्ध में उसे अन्य समाजों तथा समुदायों के प्रतिरूपों के माध्यम से समझने तथा उसकी व्याख्या करने का प्रयास किया है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्राचीन फारस के समाज से तुलना करते हुए वहां चार वर्ग बताये गये थे–

(i) घुड़सवार तथा शासक वर्ग

(ii) भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित तथा चिकित्सक

(iii) खगोल शास्त्री तथा अन्य वैज्ञानिक

(iv) कृषक तथा शिल्पकार

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



2. "अपवित्रता" पर विचार :- अल-बिरूनी जाति व्यवस्था के सम्बन्ध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को मानता था, परन्तु वह अपवित्रता की धारणा को अस्वीकार करता है। उसके अनुसार "प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है और सफल होती है।" उदाहरण के लिए सूर्य वायु को स्वच्छ करता है और समुद्र में नमक पानी को गन्दा होने से बचाता है। अल-बिरूनी इस बात पर जोर देता है कि यदि ऐसा नहीं हो, तो पृथ्वी पर जीवन असंभव हो जाता।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उसके अनुसार जाति व्यवस्था में अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरूद्ध थी।

3. भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था :- अल-बिरूनी ने भारत में प्रचलित वर्ण व्यवस्था का उल्लेख निम्नानुसार किया है।

(i) ब्राह्मण या पुरोहित :- उसके अनुसार ब्राह्मणों को वर्ण व्यवस्था में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के मुख से मानी गयी है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

II

(ii) क्षत्रिय :- क्षत्रियों की उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा के कन्धे व भुजाओं से मानी गयी है। सामाजिक दृष्टि से इन्हें द्वितीय स्थान दिया गया है।

(iii) वैश्य :- क्षत्रियों के बाद वैश्यों का स्थान आता है। इनकी उत्पत्ति आदि देव ब्रह्मा की जंघाओं से हुई मानी जाती है तथा वर्ण व्यवस्था में इन्हें तृतीय स्थान दिया गया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(iv) शुद्र :- शुद्रों का जन्म आदि देव ब्रह्मा के चरणों से माना जाता है। चरणों का शरीर में अंतिम स्थान होने के कारण समाज में अंतिम अर्थात् चतुर्थ स्थान दिया गया तथा तीनों वर्णों की सेवा करना इनका कर्त्तव्य माना गया।

इन सभी वर्गों में भिन्नता होने के बाद भी ये शहरों व गाँवों में मिल-जुल कर रहा करते थे।

KOLORS®
make life better

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जाति → अलबरूनी

1. Intro
2. फारस
3. वर्ण
   - ब्रा
   - क्ष
   - वै
   - रु
4. अपवित्रता

✓

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 7. क्या आपको लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न–बतूता का वृत्तांत सहायक है? अपने उत्तर के कारण दीजिए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सजीव सूक्ष्म

उत्तर : इब्न-बतूता ने अपने यात्रा वृत्तान्त "रिहला" में समकालीन शहरी केन्द्रों की जीवन शैली का विस्तृत वर्णन किया है। हाँ, हमें लगता है कि समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही-सही जानकारी प्राप्त करने में इब्न-बतूता का वृत्तान्त काफी सहायक है। ऐसा लगता है कि जैसे सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया गया हो। उसकी जानकारी का मुख्य आधार उसके द्वारा किया गया सूक्ष्म अध्ययन एवं अवलोकन था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

इब्न बतूता के वृत्तान्त से समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली के बारे में निम्न जानकारियां प्राप्त होती हैं :-

1. व्यापक अवसरों से परिपूर्ण घनी आबादी वाले शहर:- इब्न बतूता के अनुसार तत्कालीन नगर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे। भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों में इच्छा शक्ति, साधनों व कौशल वालों के लिए कार्य के भरपूर अवसर थे। कभी-कभी युद्धों तथा अभियानों के कारण नगरों को नुकसान भी होता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. चमक-दमक वाले बाजार व भीड़-भाड़ वाली सड़कें :- अधिकांश शहरों में चमक-दमक वाले बाजार थे तथा विविध प्रकार की सामग्री से भरे हुए थे। अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें थीं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. **बड़े-बड़े शहर :-** इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली एक बहुत बड़ा शहर था, जिसकी आबादी बहुत अधिक थी। दौलताबाद भी कम नहीं था। वह आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।

4. **बाजारों का सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होना :-** बाजार केवल क्रय-विक्रय के स्थान ही नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मंदिर व मस्जिद होती थी। कुछ बाजारों में नर्तकी, संगीतकारों व गायकों के प्रदर्शन हेतु सार्वजनिक स्थान भी उपलब्ध था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

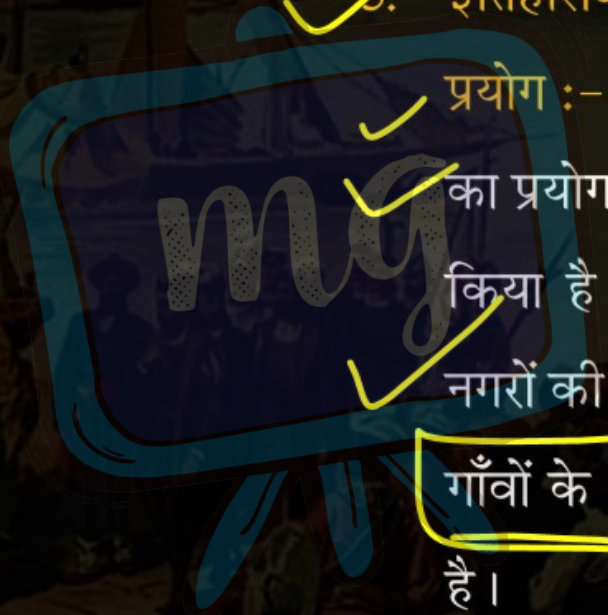

6. इतिहासकारों द्वारा इब्न-बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग :- इतिहासकारों ने इब्न बतूता के वृत्तान्त का प्रयोग नगरों की समृद्धि का वर्णन करने में किया है। इतिहासकार यह तर्क देते हैं कि नगरों की समृद्धि व सम्पत्ति का एक बड़ा भाग गाँवों के अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त होता है।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

6. भारतीय उपमहाद्वीप का व्यापार व वाणिज्य के अन्तर एशियाई तन्त्रों से जुड़ा होना :– इब्न बतूता के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप व्यापार व वाणिज्य के एशियाई तंत्रों से भली भाँति जुड़ा हुआ था। भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में बहुत अधिक माँग थी जिससे व्यापारियों व शिल्पकारों को बहुत अधिक आर्थिक लाभ होता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

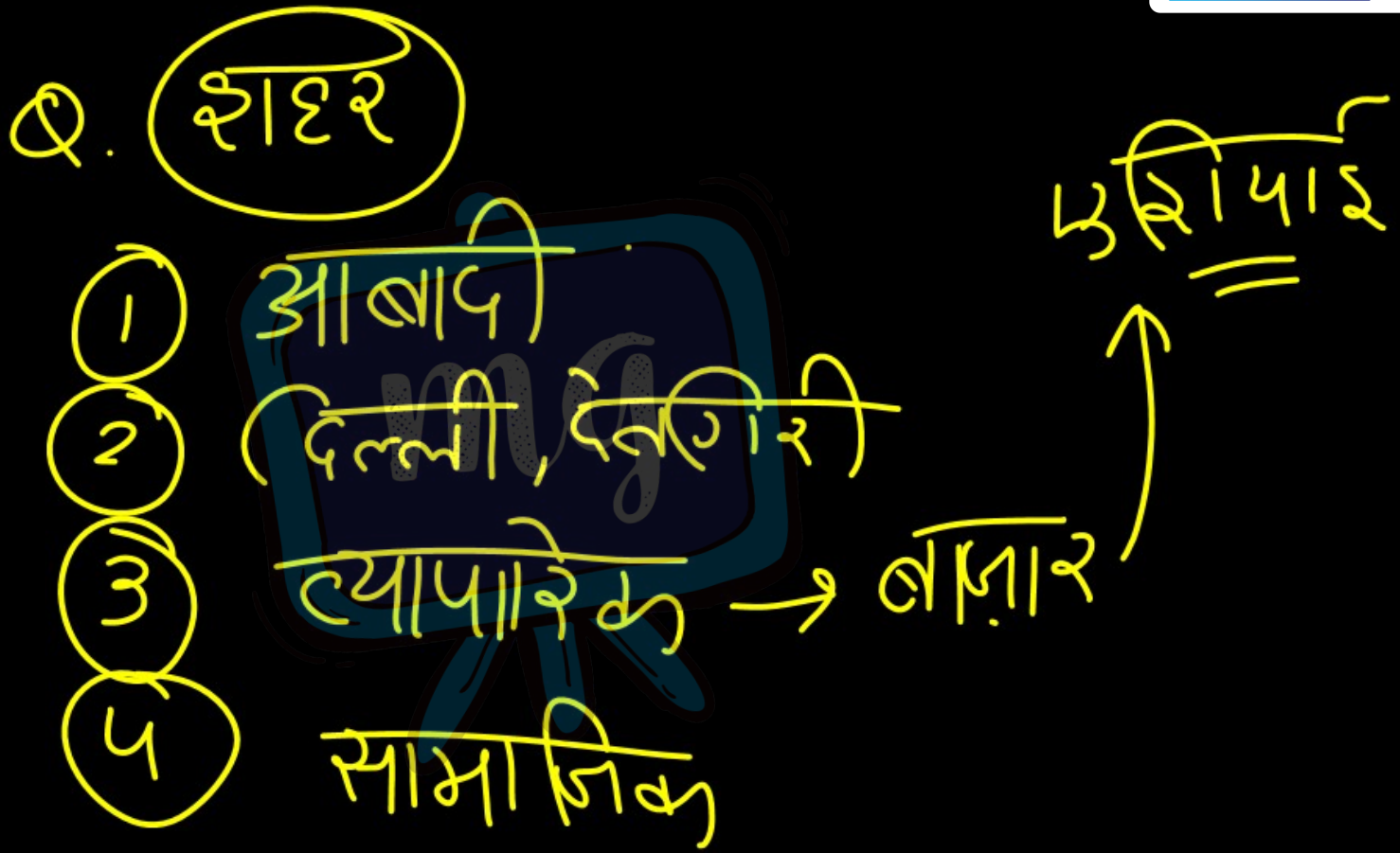

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



प्रश्न 8. चर्चा कीजिए कि बर्नियर का वृत्तान्त किस सीमा तक इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में सक्षम करता है ?

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : फ्रांस्वा बर्नियर ने समकालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त लिखा है वह सर्वथा सत्य नहीं है उसके अनुसार भारत तथा यूरोप के मध्य मूल असमानताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का सर्वदा अभाव था। बर्नियर का निजी भू-स्वामित्व में अत्यधिक विश्वास था तथा उसने भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य तथा उसके निवासियों, दोनों के लिए हानिकारक बताया।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सत्य ×

नेजी भूमि

बर्नियर का वृत्तान्त इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में आंशिक रूप से ही सक्षम करता है, पूर्णरूप से नहीं।

बर्नियर ने तत्कालीन ग्रामीण समाज का जो वृत्तान्त प्रस्तुत किया है, निम्न बिन्दुओं के द्वारा उसका वर्णन किया जा रहा है :-

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



1. भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव :- बर्नियर के अनुसार भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था। इसके अनुसार संपूर्ण भूमि का स्वामी मुगल सम्राट को माना जाता था। सम्राट इस भूमि को अपने अमीरों में बांट देता था। इस व्यवस्था से समाज व अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

2. भू-धारकों पर प्रतिकूल प्रभाव :- बर्नियर के अनुसार भूमि पर राजकीय स्वामित्व के कारण भूधारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे। निजी भू-स्वामित्व के अभाव में बेहतर भूधारकों के वर्ग का उदय नहीं हो पाया, जो भूमि के सुधार व अच्छे रख-रखाव का प्रयास करता। इस कारण कृषि का विनाश, किसानों का उत्पीड़न और समाज के सभी वर्गों के स्तर में पतन हुआ। केवल शासक वर्ग ही ऐसा था जिस पर इस व्यवस्था का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

3. भारतीय समाज को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानना – बर्नियर भारतीय समाज के लोगों को दरिद्र लोगों का जनसमूह मानता था। यह समाज अमीरों व शक्तिशाली शासक वर्ग के अधीन था। उसके अनुसार ''भारत में मध्य की स्थिति के लोग नहीं हैं।'' अर्थात या तो अमीर लोग है या दरिद्र लोग।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

4. भूमि पर राज्य के स्वामित्व के साक्ष्य का अभाव:- बर्नियर के वर्णन में सम्पूर्ण भूमि का स्वामी राज्य या शासक को माना है परन्तु किसी भी सरकारी मुगल दस्तावेजों में ऐसा एक भी साक्ष्य नहीं मिला कि राज्य ही सम्पूर्ण भूमि का एक मात्र स्वामी था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

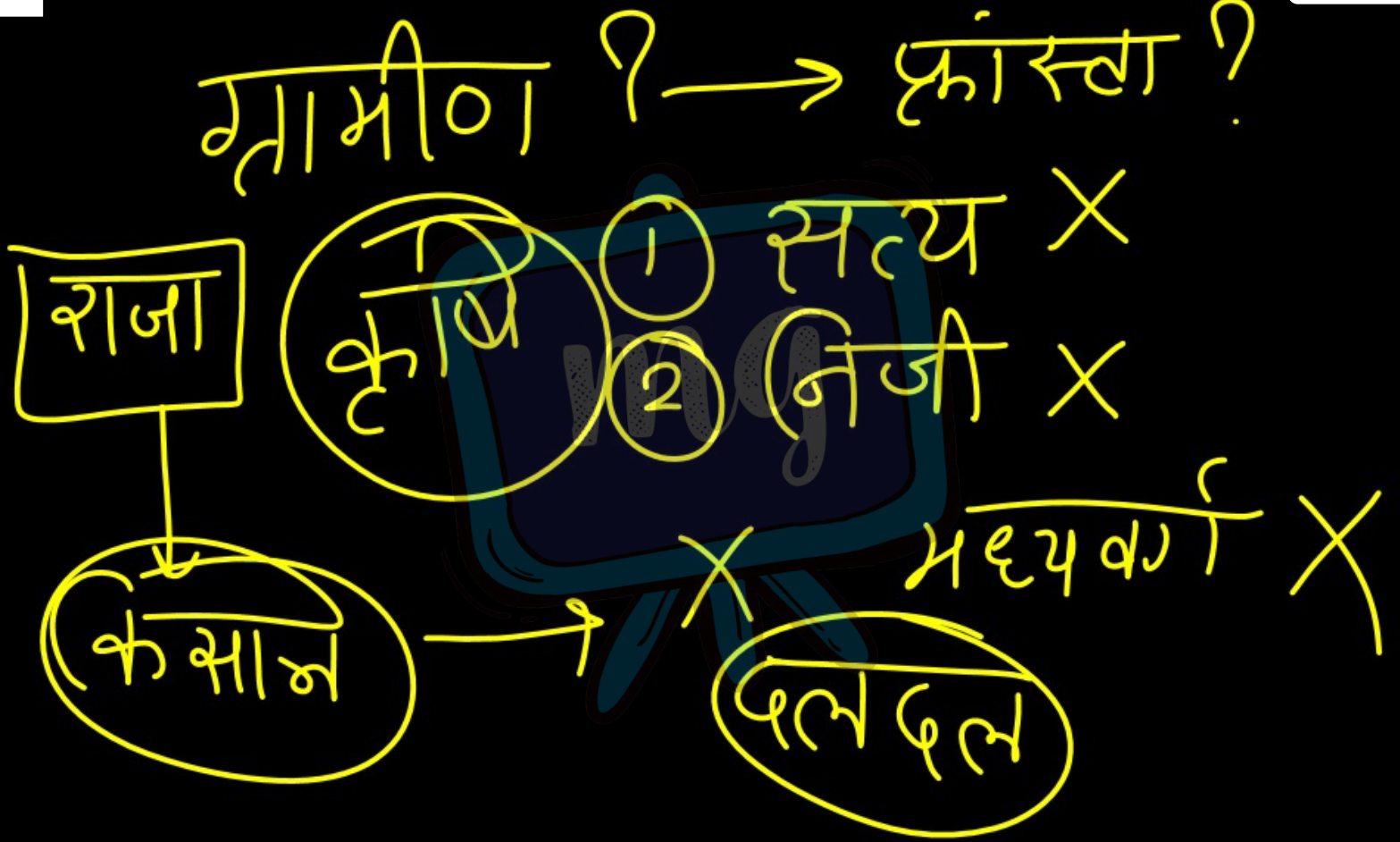

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

5. ग्रामीण समाज का वर्णन वास्तविकता से दूर :- वास्तव में बर्नियर का ग्रामीण समाज का वर्णन सच्चाई से बहुत दूर है। सोलहवीं व सत्रहवीं शताब्दी के ग्रामीण समाज में चारित्रिक रूप से बड़े पैमाने पर सामाजिक व आर्थिक अंतर था। एक ओर बड़े जमींदार लोग थे अन्यों में "अस्पृश्य" भूमिहीन श्रमिक (बलाहार) थे। इन दोनों के मध्य किसान इसके अलावा छोटे किसान भी थे जो बहुत मुश्किल से अपना जीवन यापन कर पाते थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

प्रश्न 9. यह बर्नियर के वृत्तान्त से लिया गया एक उदाहरण है :

ऐसे लोगों द्वारा तैयार सुन्दर शिल्पकारी के बहुत उदाहरण है, जिनके पास औजारों का अभाव है और जिनके विषय में यह भी नहीं कहा जा सकता है कि उन्होंने किसी निपुण कारीगर से कार्य सीखा है। कभी-कभी वे यूरोप में तैयार वस्तुओं की इतनी निपुणता से नकल करते हैं कि असली और नकली के बीच अन्तर कर पाना मुश्किल हो जाता

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

है। अन्य वस्तुओं में, भारतीय लोग बेहतरीन बंदूक और ऐसे सुन्दर स्वर्णाभूषण बनाते हैं कि संदेह होता है कि कोई यूरोपीय स्वर्णकार कारीगरी के इन उत्कृष्ट नमूनों से बेहतर बना सकता है। मैं अक्सर इनके चित्रों की सुन्दरता, मृदुलता तथा सूक्ष्मता से आकर्षित हुआ हूँ।

उनके द्वारा (बर्नियर) अलिखित शिल्प कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए तथा इनकी तुलना अध्याय में वर्णित गतिविधियों से कीजिए।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर : बर्नियर ने इस उदाहरण में सुन्दर स्वर्ण आभूषण निर्माण व बन्दूकें बनाने आदि शिल्प कला का उल्लेख किया है। उसके अनुसार भारतीय स्वर्णकार ऐसे सुन्दर सोने के आभूषण बनाते हैं कि संदेह होता है कि कोई यूरोपीय स्वर्णकार कारीगरी के इन उत्कृष्ट नमूनों से अच्छा बना सकता है।

राजकीय कारखानों का उल्लेख करते हुए उनमें होने वाले विविध शिल्प गतिविधियों का उल्लेख किया है। शिल्पकार प्रतिदिन सुबह कारखानों में आते थे तथा दिनभर अपना कार्य कर शाम को अपने-अपने घर चले जाते थे।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बर्नियर द्वारा अलिखित शिल्पकार्य तथा इनका तुलनात्मक विवरण :-

(1) जरी का कार्य

(2) कालीन अथवा गलीचे का कार्य

(3) कढ़ाई का कार्य

(4) कसीदाकारी का कार्य

(5) स्वर्ण आभूषण का कार्य

(6) सोने-चाँदी के वस्त्रों का कार्य

(7) चित्रकारी

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. बर्नियर और इनवतूत।
ने भारतीय कृषि के
बारे में क्या वर्णन करा
है?

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

(8) बढ़ईगिरी

(9) खरादी

(10) कपड़े सीना

(11) जूते बनाना

(12) रेशम, बारीक मलमल के वस्त्र निर्माण

बर्नियर के अलावा इब्न बतूता जो मोरक्को से भारत आया था, ने भी भारतीय वस्तुओं की अत्यधिक प्रशंसा की है।